**सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र**
**नई दिल्ली**
**संक्षिप्त नोट**
**अनुस्थापन पाठ्यक्रम शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप**

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन देश के सभी भागों के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के सेवारत शिक्षकों/शिक्षिकाओं तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए किया जाता है। इसकी अवधि लगभग तीन सप्ताह तक की होती है तथा इसमें विविध कार्यक्रम शामिल होते हैं, जैसे-व्याख्यान, व्याख्यान-प्रदर्शन, व्यवहारिक कक्षाऐं और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक रूचि के स्थानों की शैक्षिक यात्राऐं। इस प्रशिक्षण में भाग लेने वाले अध्यापकों का परिचय अपनी समृद्ध कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत की संरचना से कराया जाता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों/शिक्षिकाओं को भारत की विविध रचनात्मक अभिव्यक्तियों को विचार देने हेतु इस दृष्टि से तैयार किया जाता है कि स्कूली बच्चे प्रकृति और कला में निहित सौन्दर्य को उद्भासित कर सकें। जन समुदाय के सदस्यों के साथ, विशेषकर युवा पीढ़ी द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत तथा विविध प्रकार की भौगोलिक विशिष्टताओं व उन प्रजातिय, धार्मिक, भाषायी समूहों के बारे में समझा जाना जरूरी है, जिन्होंने हमारी संस्कृति की समृद्वि और सौन्दर्यात्मक गुणवत्ता को बढ़ाने में योगदान किया है। यही जागरूकता सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेम की भावना संजोती है तथा अच्छे नागरिक बनाने में मदद करती है।

**नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :**

- भारतीय संस्कृति, इसकी निरंतरता और विविधता के प्रति जागरूकता पैदा करना।
- अध्ययन, अध्यापन को समग्र अनुभव बनाने के लिए कक्षा शिक्षण के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सांस्कृतिक घटकों को शामिल करने के लिए प्रविधियां विकसित करना।
- नई शिक्षा नीति 2020 के प्रस्ताव अनुसार शिक्षा में कलाओं को एकीकृत करके रचनात्मक अभिव्यक्ति कौशल को बढ़ाना और प्रशिक्षण प्रदान करना।
- नवीन शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए प्रतिभागियों को विद्वानों, कलाकारों और शिक्षाविदों के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करना।
- देश के सभी भागों के शिक्षकों/शिक्षिकाओं को विभिन्न विषयों के शिक्षण के लिए एक साथ मिल-जुल कर काम करने का अवसर प्रदान करना।

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

पाठ्यक्रम की रूपरेखा निम्नलिखित है :

- कला और संस्कृति का सैद्धांतिक अध्ययन
- कला और शिल्प में व्यवहारिक प्रशिक्षण
- पाठ योजनाओं की तैयारी, शिक्षा को संस्कृति से जोड़ने की पद्धतियों पर परियोजना
- ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों और प्राकृतिक उद्यानों के शैक्षिक भ्रमण।
- सांस्कृति और शिक्षा के अध्ययन और चर्चा के माध्यम से मूल्यांकन।
- अन्य शैक्षिक गतिविधियां।

प्रतिभागी शिक्षकों को भी अपने क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाएगा। प्रतिनियुक्त शिक्षकों से अनुरोध किया जाता है कि वे लोक गीतों, नृत्यों और सांस्कृतिक मूल्य की अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं की वेशभूषा, प्रदर्शनों की सूची लाएं जिसे वे पाठ्यक्रम के दौरान अन्य राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के अपने सहयोगियों के साथ साझा करना चाहें।

दर्शन शास्त्र, सौन्दर्य शास्त्र, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, साहित्य, संगीत, नृत्य, रंग-मंच, लोक और पारंपरिक कला, हस्तशिल्प आदि के पहलुओं पर सचित्र व्याख्यान और प्रदर्शन की व्यवस्था की जाती है। इनका उद्देश्य प्रतिभागियों में भारत की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध पहलुओं के प्रति उन्मुखीकरण और ठोस पृष्ठभूमि तैयार करना है। प्रत्येक विषय के व्याख्यान में कुछ आवश्यक परिभाषाओं और कलारूपों से संबंधित तकनीकों के विवरण के साथ संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी दी जाती है। हालांकि प्रमुख लक्ष्य यह है कि युवा पीढ़ी के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति रूचि और आदर कैसे पैदा की जाए। यह सभी व्याख्यान सचित्र बहुल हैं एवं संगीत और नृत्य आदि विषयों में व्याख्यान के साथ लाइव प्रस्तुतिकरण दिया जाता है। व्याख्यान संबंधित क्षेत्रों के प्रसिद्ध विद्वान, विशेषज्ञ, कलाकारों द्वारा दिए जाते हैं।

इन व्याख्यानों के अलावा, चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना, बुक बाइंडिंग, मैक्रेम, बांधनी पारंपरिक हस्तशिल्प में व्यावहारिक कक्षाओं की भी व्यवस्था की जाती है और प्रत्येक शिक्षक प्रतिभागी से कम से कम तीन या चार कला सीखने की उम्मीद की जाती है। प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षु को इन शिल्पों के कौशल और तकनीकों को सीखने में लगभग एक सप्ताह लगता है जिसे वह स्कूलों में आसानी से सिखा सकते हैं। शिक्षकों को उन शिल्पों में प्रशिक्षण दिया जाता है जो लागत, सामग्री की उपलब्धता और उत्पादक मूल्य के मामले में भारतीय स्कूलों के लिए अनुकूल हैं।

इसके अलावा, पाठ्यक्रम के दौरान भारतीय भाषाओं में गीत सिखाए जाते हैं। इन सत्रों में शिक्षकों को सभी भाषाओं में निहित सुंदरता और संगीत अभिव्यक्तियों में समृद्धि और विविधता के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जाता है। शिक्षकों को शारीरिक व्यायाम और भारतीय नृत्य रूपों में इस्तेमाल होने वाली पारंपरिक मुद्राओं और संकेतों के माध्यम से गतिविधियों और माइम से भी परिचित कराया जाता है। ये गतिविधियाँ प्रशिक्षुओं/प्रशिक्षण शिक्षकों में संचार कौशल को बढ़ाने में मदद करती हैं और बच्चों/छात्रों की आंतरिक क्षमता और प्रतिभा की खोज के लिए एक वातावरण बनाने के लिए कविता, संगीत और संचलन के लिए उनके कक्षा शिक्षण से संबंधित हैं। प्रतिभागी शिक्षा के लिए कला के उपयोग पर शैक्षिक सहायता और अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करते हैं। अनुस्थापन पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को इस तरह प्रशिक्षित करना है जिससे वे कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने और पाठ्यक्रम के साथ कला और शिल्प के ज्ञान को एकीकृत करने के लिए नवीन पद्धतियों को विकसित कर सकें।

प्रशिक्षण के अंत में प्रतिभागी पाठ योजनाओं को अंतिम रूप देते हैं और कभी-कभी स्थानीय स्कूल के छात्रों के साथ काम करते हैं जिससे मूल्यांकन और फीडबैक प्राप्त हों।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक अनूठी विशेषता यह है कि देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले विभिन्न विषयों को पढ़ाने वाले, विभिन्न भाषा बोलने वाले शिक्षक एक साथ रहते हैं और भारत के जीवन और संस्कृति के बहुमुखी पहलुओं को जानते हैं। इससे उन्हें इस ज्ञान को शिक्षण अभ्यासों में एकीकृत करने में सहायता मिलती है साथ ही हमारी विरासत में जागरूकता और रुचि पैदा होती है।

प्रतिनियुक्त शिक्षकों/शिक्षक प्रशिक्षकों का अकादमिक रिकॉर्ड अच्छा होना चाहिए और इनमें से ज्यादातर को सामाजिक विज्ञान और भाषा शिक्षण के विषयों से लिया जाना चाहिए। अन्य विषयों के शिक्षकों का भी चयन किया जा सकता है यदि वे इस कार्यक्रम में रुचि रखते हैं। देश के सभी हिस्सों से भाग लेने वाले शिक्षकों के लाभ के लिए विशेषज्ञ द्विभाषी भाषा अर्थात अंग्रेजी और हिंदी में व्याख्यान देंगे। इसलिए, अंग्रेजी में समझ और उसमें काम करने का ज्ञान अपेक्षित है।

प्रत्येक विद्यालय जहां के शिक्षक को प्रशिक्षित किया जाता है, उनको सीआरटी की सांस्कृतिक शैक्षिक किट प्रदान की जाती है जिसमें उपलब्धता के आधार पर सांस्कृतिक पैकेज शामिल होता है, ताकि शिक्षक अपने कार्य को प्रभावी ढंग से करने में सक्षम हो सकें। चूँकि सामग्री के उपयोग से शिक्षक का कार्यभार बढ़ जाता है इसलिए यह किट उन चयनित विद्यालयों को दी जाती है, जो प्रशिक्षण के दौरान पाठ्यक्रम में शिक्षक की रुचि, उनकी उपस्थिति और कार्यक्रम में उनकी सक्रिय भागीदारी और कक्षा में उनके प्रदर्शन के मूल्यांकन द्वारा निर्धारित की जाती है। सांस्कृतिक शैक्षिक किट का दावा उस संस्था द्वारा अधिकार के रूप में नहीं किया जा सकता है जिसका शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिनिधित्व करता है।

इस पाठ्यक्रम की अवधि लगभग 18 कार्य दिवसों की होती है।